

श्रीउच्छिष्टमहागणपति ध्यानम्

{ श्रीउच्छिष्टमहागणपति ध्यानम् }

मूलाधारे सुयोन्याभ्ये सिद्धत्रिवरमण्डले ॥

समासीनं पराशक्तिविग्रहं गणनायकम् ॥ १ ॥

रक्तोत्पलसमप्रभ्यं नीलमेघसमप्रभम् ॥

रत्नप्रभालसदीप्तमुकुटाञ्जितमस्तकम् ॥ २ ॥

करुणारससुधाधारास्रवदक्षित्रयान्वितम् ॥

अक्षिकुक्षिमहावक्षः गण्डशूकाद्विभूषणम् ॥ ३ ॥

पाशाङ्कुशेषुकोट्यण्डपञ्चबाणलसत्करम् ॥

नीलकान्तिघनीभूतनीलवाणीसुपार्श्वकम् ॥ ४ ॥

सुत्रिकोणाभ्यनीलाङ्गरसास्वादनतत्परम् ॥

पत्न्यालिङ्गतवामाङ्गं सप्तमातृनिषेवितम् ॥ ५ ॥

ब्रह्मविष्णुमहेश्वरादिसम्पूजितपादुकम् ॥

महद्द्वयपद्मेवाथ्यपादुका मन्त्रसारकम् ॥ ६ ॥

नवावरणयज्ञाभ्य वरिवस्याविधिप्रियम् ॥

पञ्चावरणयज्ञाभ्य विधिसम्पूज्यपादुकम् ॥ ७ ॥

अभण्डकोटिब्रह्माण्डामण्डलेश्वरमव्ययम् ॥

रचनाक्षरसम्पूर्णमन्त्रराजस्वऋषिणाम् ॥ ८ ॥

गिरिव्याहृतिवर्णात्ममन्त्रतत्त्वप्रदर्शकम् ॥

अरुणारुणतनुस्थायमहाकामकलात्मकम् ॥ ९ ॥

महागोप्यमहाविद्या प्रकाशितकलेभरम् ॥

त्रिष्ठिवं त्रिद्वयं शान्तं त्रिगुणादिविवर्जितम् ॥ १० ॥

अष्टोत्तरशताभिष्यकलान्यासविधिप्रियम् ॥

त्रिदशकारमहाद्वीपमध्यवाससुविग्रहम् ॥ ११ ॥

त्रिदशभिधमथनोत्पन्नचित्सारघनविग्रहम् ॥

वायामगोचरं शान्तं शुद्धथैतन्यऋषिणाम् ॥ १२ ॥

मूलकन्दस्थयिदेशनवताण्डवपण्डितम् ॥

षडम्बुरुहसंस्थायिपरयिद्योमत्सासुरम् ॥ १३ ॥

अकारादिकक्षारान्तवर्णलक्षितचित्सुभम् ॥

अकाराक्षरनिर्दिष्टप्रकाशमयविग्रहम् ॥ १४ ॥

हकाराभ्यविमर्शात्मप्रभादीप्तजगत्त्रयम् ॥

महाहंसजपध्यानविधिज्ञातस्वऋषकम् ॥ १५ ॥

सद्योदितमहाप्रज्ञाकारं संसारतारकम् ॥

भोक्षलक्ष्मीप्रदातारं कालातीतमहाप्रभुम् ॥ १६ ॥

नामरूपादिसम्भिन्ननित्यपूर्वाचिद्धुतमम् ॥
प्रत्यग्भूतमहाप्रज्ञागात्रगोचरविग्रहम् ॥ १७ ॥

महाकुण्डलिनीरूपं षट्स्कनगरेश्वरम् ॥
अप्राकृतमहादिव्यचैतन्यात्मस्वरूपिणम् ॥ १८ ॥

नादभिन्दुकलातीतं कार्यकारणवर्जितम् ॥
षडम्बुरुहयकान्तः स्फुरत्सौदामिनीप्रभम् ॥ १९ ॥

तत्त्वमस्याद्विवाक्यार्थपरिबोधनपण्डितम् ॥
ब्रह्मादिकीटपर्यन्तव्याप्तसम्बित्सुधारसम् ॥ २० ॥

धृष्टज्ञानक्रियानन्दसर्वतन्त्र स्वतन्त्रिणम् ॥
हृद्यग्रन्थिभिर्द्विधादर्शनोत्सुकमानसम् ॥ २१ ॥

पञ्चकृत्यपरेशानं महात्रैपुरविग्रहम् ॥
श्रीयकराजमध्यस्थशून्यग्राममहेश्वरम् ॥ २२ ॥

ब्रह्मविद्यास्वरूपश्रीललितारूपधारिणम् ॥
वशिन्याधावृतं साध्यं अद्वयानन्दवर्धनम् ॥ २३ ॥

आदिशङ्कररूपेशदक्षिणामूर्तिपूजितम् ॥
असंस्पृष्टमहाप्रज्ञामिभ्याद्वैतस्थितिप्रभम् ॥ २४ ॥

अेवं सञ्चितयेद्देवं उच्छिष्टगणनायकम् ॥

नीलतारासमेतं तु सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥ २५ ॥

This is a Dhyana that was composed by Shri Harsha Ramamurthy.

The Upasana, significance and secret of Shri Uchchishta Mahaganapathi

are known to very few advanced Sadhakas.

Encoded and proofread from the source document at www.kamakotimandali.com

by YV Malleswara Rao malleswararaoy at yahoo.com

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated त्oday

<http://sanskritdocuments.org>

Uchchishta Maha Ganapathi Dhyanam Lyrics in Gujarati PDF

% File name : uchChiShTamahAgaNapatidhyAnam.itx

% Location : doc_ganesha

% Author : Sri Harsha Ramamurthy (Harshananda?)

% Language : Sanskrit

% Subject : philosophy/hinduism/religion

% Transliterated by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy at yahoo.com

% Proofread by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy at yahoo.com

% Description-comments : http://www.kamakotimandali.com/stotra/stotra_index.html

% Latest update : July 12, 2012

% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

% Site access : <http://sanskritdocuments.org>

%

% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study

% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of

% any website or individuals or for commercial purpose without permission.

% Please help to maintain respect for volunteer spirit.

%

We acknowledge well-meaning volunteers for Sanskritdocuments.org and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.

Please check their sites later for improved versions of the texts.

This file should strictly be kept for personal use.

